सकारात्मक अहिंसा (फोल्डर नं. ००२११९)

कन्हैयालाल लोढ़ा

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
विषयानुक्रमणिका
प्राक्कथन
भूमिका
प्रथम खण्ड – कन्हैयालाल लोढ़ा
अहिंसा का सकारात्मक रूप --- १
करुणा और अनुकम्पा -- १७
सेवा -- २७
दान --- ४७
वात्सल्य -- ५९
आत्मीयता और सहानुभूति --- ६६
सकारात्मक अहिंसा धर्म है --- ७४
मैत्रीभाव -- ८६
मार्दव --- ९३
सकारात्मक अडिंसा पर आपत्तियाँ और उनका निराकरण -------------------------------------- ९६
द्वितीय खण्ड – अन्य विद्वान् मनीषियों के संकलित विचार
दान का महत्त्व – आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. --- ११९
दान में उदारता – आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. --------------------------------------- १३०
सेवाप्रधान मनुष्य धर्म – उपाध्याय श्री अमरमुनिजी -- १३५
जैन संस्कृति में सेवा-भाव – उपाध्याय श्री अमरमुनिजी ------------------------------------ १४१
धर्म में दान को प्रथम स्थान क्यों – उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी --------------------------- १४७
दान और पुण्य-एक विवेचन – उपाध्याय श्री पुष्करमुनि------------------------------------- १५५
भारतीय साहित्य में दान की महिमा – श्री विजयमुनिजी शास्त्री ----------------------------- १६२
अहिंसा बनाम दया – महात्मा गाँधी --- १८७
करुणा के विविध रूप – मुनि श्री भद्रगुप्तविजयजी --- १८९
निवृत्ति और प्रवृत्ति – पं. सुखलाल संघवी -- १९४
निवृत्ति एवं प्रवृत्तिपरक अहिंसा – महासतीश्री पुष्पवतीजी म. -------------------------------- २०१
तीर्थङ्करों का वर्षीदान क्या विसर्जन नहीं है – संघप्रमुख मुनि श्री चन्दनमलजी ------------- २०९
मनुष्य और सेवाधर्म – केदारनाथ --- २१५
अहिंसा का वैज्ञानिक प्रस्थान – काका कालेलकर -- २२२
कर्मक्षय और प्रवृत्ति – किशोरदास घ. मश्रुवाला --- २२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करुणा मोह का अंश नहीं ध्वंस है – आचार्य श्री विद्यासागरजी म. ---------------------------- २३३
सेवा धर्म – युगलकिशोर मुख्तार -- २३८
सर्वहितकारी प्रवृत्ति और सेवा – स्वामी श्री शरणानन्दजी ------------------------------------- २४८
दया-दान के दोहे – सत्यनारायण गोयनका -- २८०
सेवा के बिना अहिंसा अधूरी – डी. आर. महेता -- २८३
सेवा से आत्म-विकास – श्रीमती सुशीला बोहरा --- २९०
सेवा-गीत – डॉ. नरेन्द्र भानावत -- २९६
दान, दया का एकान्त निषेध खतरनाक – पं. बेचरदास दोशी -------------------------------- २९८
सेवा में सदुपयोग – श्रीमती प्रसन्ना भण्डारी -- २९९
जीव मात्र के लिए आदर – संकलित --- ३०१
बलिदान-सेवा-चैरेटी – महादेवभाई -- ३०२
Positive Contents of Jainism – Joharimal parekh -- 303
परिशिष्ट-- ३३०
शुद्धिपत्र -- ३४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org